अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – चौथी कक्षा (10 जनवरी, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए 10X1=10

(a) साधु को आहार करते समय लगने वाला दोष है–

क. लित्त ख. पिहिय

ग. अपमाणं घ. विज्जा ( )

(b) भाषा समिति का भेद नहीं है–

क. द्रव्य ख. क्षेत्र

ग. यतना घ. काल ( )

(c) पांच समिति और तीन गुप्ति का थोकड़ा लिया गया है–

क. नन्दी सूत्र से ख. दशवैकालिक सूत्र से

ग. उत्तराध्ययन सूत्र से घ. आवश्यक सूत्र से ( )

(d) लब्धि के भेद होते हैं–

क. 10 ख. 5

ग. 3 घ. 12 ( )

(e) श्रुतज्ञान का भेद नहीं है–

क. संज्ञी ख. मिथ्या

ग. गमिक घ. प्रतिपाति ( )

(f) पांच अनुत्तर विमान में कितने ज्ञान की नियमा है–

क. 2 ख. 1

ग. 3 घ. 4 ( )

(g) नारकी अपर्याप्त अनाहारक में उपयोग होते हैं–

क. 8 ख. 9

ग. 6 घ. 5 ( )

(h) तिर्यंच के अपर्याप्त में कौनसा ज्ञान नहीं होता है–

क. मतिज्ञान ख. अवधिज्ञान

ग. श्रुतज्ञान घ. मतिअज्ञान ( )

(i) भाव देव की अवगाहना होती है–

क. जघन्य 7 धनुष, उत्कृष्ट 500 धनुष

ख. जघन्य 2 हाथ, उत्कृष्ट 500 धनुष

ग. जघन्य 1 हाथ, उत्कृष्ट 7 हाथ

घ. जघन्य 4 हाथ, उत्कृष्ट 500 धनुष ( )

(j) नवग्रैवेयक की आगति व गति होती है–

क. आगति 2, गति 1 ख. आगति 9, गति 16

ग. आगति 6, गति 5 घ. आगति 9, गति 1 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ अथवा नहीं में दीजिए– 10X1=10

(a) रजोहरण, वस्त्र, पात्र आदि औघिक उपधि है। .....

(b) दूसरों की हानि पहुँचाने का विचार करना आरंभ है। .....

(c) अपनी जाति कुल आदि बताकर आहारादि लेवे तो आजीव दोष है। .....

(d) अनिन्द्रिय में केवलज्ञान की नियमा होती है। .....

(e) विभंग ज्ञान के अलद्धिया में 5 ज्ञान की भजना तथा 3 अज्ञान की नियमा होती है। .....

(f) ज्ञान लब्धि के थोकड़े में 21 द्वार का अधिकार चलता है। .....

(g) नारकी व तिर्यंच गति में प्रथम पांच लेश्या होती है। .....

(h) देव पांच प्रकार के होते हैं। .....

(i) देवाधिदेव की स्थिति जघन्य 72 वर्ष की, उत्कृष्ट 33 सागरोपम की है। .....

(j) श्री पन्नावणा सूत्र के छठे पद में छोटी गतागत का वर्णन है। .....

3. निम्नलिखित में जोड़िया मिलान कर सही उत्तर लिखिए– 10X1=10

(a)	स्थंडिल भूमि के प्रकार	(क) 03	.....
(b)	एषणा समिति के भेद	(ख) 05	.....
(c)	वचन के दोष	(ग) 02	.....
(d)	कायगुप्ति के भेद	(घ) 08	.....
(e)	अकषायी में ज्ञान	(च) 27	.....
(f)	मनःपर्यवज्ञान के भेद	(छ) 04	.....
(g)	समुच्चय ज्ञानी के भंग	(ज) 04	.....
(h)	साधुजी के गुण	(झ) 10	.....
(i)	12वें देवलोक की आगति	(य) 111	.....
(j)	मनुष्य की गति	(र) 02	.....

प्र. 4 मुझे पहचानो– 10X2=20

(a) मैं निरवद्य वचन बोलने की सम्यक् प्रवृत्ति हूँ। .....

(b) मैं उद्‌गम का ऐसा दोष हूँ, जो साधु के लिए मेहमानों को आगे–पीछे करने से लगता हूँ। .....

(c) मैं ऐसा दोष हूँ, जो साधु को भोजन के स्वाद की प्रशंसा करने पर लगता हूँ। .....

(d) मैं मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकती हूँ। .....

(e) मैं ऐसा अज्ञान हूँ, जिसकी उत्कृष्ट स्थिति 33 सागर तथा देशोन करोड़ पूर्व है। .....

(f) मेरी संख्या अज्ञान के पर्याय की अल्पबहुत्व में सबसे कम है। .....

(g) हम नरक गति के ऐसे जीव हैं, जिनमें सास्वादन समकित नहीं होती है। .....

(h) मैं तिर्यंच का ऐसा जीव हूँ, जिसमें एक योग पाया जाता है। .....

(i) मैं पाँच देवों में से ऐसा देव हूँ, जिसमें वैक्रिय करने की शक्ति है, पर वैक्रिय करता नहीं। .....

(j) मेरी आगति 3 की व गति 6 की है। .....

प्र. 5 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए (कोई नौ) 9X2=18

(a) मालोहडे दोष का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(b) साधु को आहार करते समय लगने वाले कोई दो दोषों का अर्थ सहित उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

(c) ज्ञान लब्धि का संज्ञी द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

(d) केवलज्ञान के भेदों को लिखिए।

.....

.....

.....

(e) नारकी एवं मनुष्य गति के जीवों में कौन–कौनसी लेश्याएँ मिलती हैं?

.....

.....

.....

(f) मनुष्य अपर्याप्त अनाहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग एवं लेश्या की संख्या लिखिए।

.....

.....

.....

(g) भव्य द्रव्य देव किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

(h) कौनसी नारकी के जीव तीर्थंकर हो सकते हैं तथा कौनसी नारकी के नहीं?

.....

.....

.....

(i) नरदेव एवं धर्मदेव का अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

(j) देव के 49 भेदों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

प्र. 6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन–चार वाक्यों में दीजिए– (कोई आठ) 8X4=32

(a) परिभोगैषणा के चार भेद अर्थ सहित लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) साधु के आहार ग्रहण करने के कारणों का गाथा सहित उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) ज्ञान लब्धि के थोकड़े में चारित्र लब्धि का द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) गतिक किसे कहते हैं? नरक, तिर्यंच एवं देव गतिक में ज्ञान व अज्ञान की नियमा–भजना लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) 32 बोल के बासठिये में समुच्चय जीव के पर्याप्त व अपर्याप्त, आहारक तथा अनाहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्याएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) पांच देव के थोकड़े में से वैक्रिय द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) पांच देव के थोकड़े में नरदेव एवं धर्मदेव की आगति व गति को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) पांच स्थावर तथा तीन विकलेन्द्रिय की आगति व गति को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) निम्न दोषों का अर्थ लिखिए :–

क. मंते　　ख. अच्छिज्जे

ग. अपरिणय　　घ. साहरिय

.....

.....

.....

.....

.....

.....